बात है कि संघर्षकारी शक्तियाँ बाद में देवयोनि जात मान ली गईं । पहला संघर्ष शायद असुरों से हुआ । यह बड़ी गर्वीली जाति थी । आर्यों का प्रभुत्व इसने कभी नहीं माना । फिर दानवों, दैत्यों और राक्षसों से संघर्ष हुआ । गंधर्वों और यक्षों से कोई संघर्ष नहीं हुआ । वे शायद शांतिप्रिय जातियाँ थीं ।

(ख) घीसा के पास न पैसा था न खेत–तब क्या वह इसे चुरा लाया है ! मन का संदेह बाहर आया ही और तब मैंने जाना कि जीवन का खरा सोना छिपाने के लिए मलिन शरीर को बनाने वाला ईश्वर उस बूढ़े आदमी से भिन्न नहीं, जो अपनी सोने की मोहर को कच्ची मिट्टी की दीवार में रखकर निश्चिंत हो जाता है । घीसा गुरु साहब से झूठ बोलना भगवान जी से झूठ बोलना समझता है । वह तरबूज कई दिन पहले देख आया था । माई के लौटने में जाने क्यों देर हो गई, तब उसे अकेले ही खेत पर जाना पड़ा ।

(ग) अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परन्तु है वह उस विशाल सामंत-सभ्यता की

Roll No. ..... **Exam Code : J-21**

Subject Code—53758

B. A. EXAMINATION

(Main) (Batch 2018 Onwards)

(Sixth Semester)

HINDI (Elective)

HINE-302

Paper–A

Time : 3 *Hours* *Maximum Marks :* 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **4+4=8**

(क) रामबोला घबराकर बाहर निकल आया । उसने स्वर से पहचान लिया था कि दूसरा आदमी उस लड़के के पिता पुत्तन महाराज ही हैं । झोपड़ी से बाहर निकलते ही लड़के के पिता ने उसे

करारा झापड़ मारा कि आँखों के आगे तारे चमकने लगे । रामबोला धरती पर गिर पड़ा । उसे लातें पड़ने लगीं । बेचारा बच्चा 'राम रे' करके चीख उठा ।

(ख) ''तुमने खंडहर हवेलियाँ अवश्य देखी होंगी, बेनीमाधव । वे खंडहर होकर अपने आकार के वैभव को तो खो देती हैं किन्तु नाम चलता रहता है कि यह अमुक व्यक्ति की हवेली थी। इसी प्रकार तुम्हारा काव्य खो जाएगा और उसकी स्मृतियों के खंडहर में तुम्हारे नाम पर टुटपुँजियों के भाव जम जाएँगे ।''

(ग) ''बाघ और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हैं । राह में सोना उछालते चलो तो भी कोई तुमसे छीनेगा नहीं । जैसा न्याय राम जी करते हैं वैसा कोई नहीं कर सकता है बेटा । रामराज्य में कोई दीन-दुर्बलों को सता नहीं सकता । कोई भूखा नहीं रहता, कहीं भी चोरी-चकारी और अन्य अपराधजनित कार्य नहीं होते ।''

(घ) नब्बे वर्ष के तपस्वी के चेहरे पर रोग जर्जरता की हल्की छाप थी, पर थकावट का नाम न था । इसे देखकर गाँव वाले चकित हुए ही

बेनीमाधव जी भी चकित हो गए । सूकर खेत में भी बाबा के दर्शनार्थ बड़ी भीड़ आया करती थी, पर वहाँ हवा फैल गई थी कि बाबा चार महीने रहेंगे, इसलिए दर्शनार्थियों की दैनिक संख्या में संतुलन आ गया था । उन्हें विश्राम करने का अवसर मिल गया ।

2. 'मानस का हंस' उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । **7**

अथवा

'मानस का हंस' उपन्यास में कल्पना तत्व पर विचार कीजिए ।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **4+4=8**

(क) यह मुझे प्राचीन युग की बात मालूम होती है । आर्यों का लिखा हुआ साहित्य ही हमारे पास बचा है । उसमें सबकुछ आर्य-दृष्टिकोण से ही देखा गया है । आर्यों से अनेक जातियों का संघर्ष हुआ । कुछ ने उनकी अधीनता नहीं मानी, वे कुछ ज्यादा गर्वीली थीं । संघर्ष खूब हुआ । पुराणों में इसके प्रमाण हैं । यह इतनी पुरानी

(v) 'मोहन राकेश की डायरी' के लेखक कौन हैं ?

(vi) 'मेरे पिताजी' किस विधा की रचना है ?

(vii) संचारी भाव कितने हैं ?

(viii) 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' में कौनसा अलंकार है ?

(ix) रस के कितने भेद हैं ?

(x) उपमा अलंकार का उदाहरण देते हुए परिभाषा दीजिए ।

परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त से संसार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से समृद्ध हुई थी । वे सामंत उखड़ गए, समाज ढह गए और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गई । संतान कामिनियों को गंधर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा—पीरों ने, भूत-भैरवों ने, काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी । दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया ।

(घ) मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही उन बेचारों को सफाई का महत्त्व समझाते-समझाते थका डालने की मूर्खता की । दूसरे इतवार को सब जैसे-के-तैसे ही सामने थे—केवल कुछ गंगाजी में मुँह इस तरह धो आए थे, कि मैल अनेक रेखाओं में विभक्त हो गया था, कुछ के हाथ-पाँव ऐसे घिसे थे कि शेष मलिन शरीर के साथ वे अलग जोड़े हुए से लगते थे । और कुछ 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' की कहावत चरितार्थ

करने के लिए मैले–फटे कुर्ते घर ही छोड़कर ऐसे अस्थिपंजरमय रूप में आ उपस्थित हुए थे, जिसमें उनके प्राण, रहने पर ही आश्चर्य है ।

4. 'अशोक के फूल' निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। **7**

अथवा

'घीसा' रेखाचित्र का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3×5=15**

(i) 'मानस का हंस' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

(ii) राजा भगत का तुलसीदास से मिलने का क्या उद्देश्य था ? वे कहाँ तक सफल रहे ?

(iii) 'रामजी कदाचित मुझे इसलिए दर्शन नहीं दे रहे हैं कि मैं रत्नावली से निठुराई बरत रहा हूँ ।' पंक्ति में निहित तुलसीदास के अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट कीजिए ।

(iv) 'घीसा' रेखाचित्र का उद्देश्य बताइए ।

(v) 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध की भाषा के विषय में लिखिए ।

(vi) महादेवी वर्मा का 'घीसा' रेखाचित्र में गंगा पार किस गाँव के प्रति आकर्षण रहा ?

6. काव्य प्रयोजन से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए। **7**

अथवा

रस की परिभाषा देते हुए उसके भेदों के बारे में लिखिए ।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **2×4=8**

(i) काव्य के कितने भेद हैं ? संक्षेप में बताइए।

(ii) अलंकार किसे कहते हैं ? शब्दालंकार एवं अर्थालंकार के बारे में बताइए ।

(iii) शृंगार रस से क्या अभिप्राय है ? इसके कितने भेद हैं ?

(iv) काव्यहेतु से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **10×2=20**

(i) रत्नावली में कौनसा चरित्र परिलक्षित होता है ?

(ii) तुलसीदास केशव से क्या प्रार्थना करते हैं ?

(iii) 'मानस का हंस' उपन्यास किसके द्वारा रचित है ?

(iv) घीसा से बच्चे कटे–कटे क्यों रहते थे ?